

मैया कौशल्या जे घर बाजत वाधाई है ।

लियो अवतार त्रिभुवन सुखदाई है ॥

गुर के प्रसाद यज्ञ पूरण भयो है आज

बुढिड़े वयस लहियो सुतु भूप सिरताज

सफल श्रीरंग कीन्ही पिछली कमाई है ॥

अयोध्या की नारि सब मंगल वाधाई लावें

सोलह श्रंगार कर नाचें कूदें और गावें

आनंद की सरिता उमड़ी अंगनाई है ॥

देव नारि रुप धारि आवती कौशल्या गेह

लाल अवलोकि सब भूल गई सुधि देह

प्रेम वारि भीजि कहें जै जै रघुराई है ॥

अवध नरेश की न कही जात फूल मन

जन्म कंगाल लहियो मानो है कुबेर धन

चारों और हर्ष की वर्षा वर्षाई है ॥

नभ और धरणी मांहि नौबत बाजन लागे

सुर मुनि फूल वर्षाई रस मोद पागे

गरीबि श्री खण्डि की भई मन भाई है ॥